LJ-1004

B.A. (Part-I)

Term End Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - I

प्राचीन हिन्दी काव्य

Time : Three Hours] [*Maximum Marks* : 75

[*Minimum Pass Marks* : 25

नोट : **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के अंक उनके दाहिनी ओर अंकित हैं। अशुद्ध एवं अनर्गल लेखन पर अंक काटे जाएंगें। एक प्रश्न के सभी खण्डों का उत्तर एक ही स्थान पर निरन्तरता बनाए हुए लिखिए। उत्तर की समाप्ति पर समाप्ति सूचक चिह्न का प्रयोग करें।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7×3

(क) भगति भजन हरि नांव है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरोण सार॥
कबीर सुमिरण सार है, और सकल जंजाल।
आदि अंत सब सोधिया, दूजा देखौं काल॥

अथवा

कुहुकि-कुहुकि जस कोइल रोई। रक्त आंसू
घुँघुची बन बोई॥
भइ करमुखी नैन तन राती। को सेराव विरहा
दु:ख ताती॥
जँह-जँह ठाढ़ि होइ बन वासी। तँह तँह होइ
घुँघचिन्ह के रामी॥
बूँद-बूँद महँ जानहुँ जीऊ। कुंजा गूँजी करहि
पिउ पिऊ॥
तेहि दुख भए मराम निपाते। लोहू बोड़ि उठे
परभाते॥
राते बिंब भीजि तेहि लोहू। परवर पाक, फाट
हियू गोहूँ॥
देखौं जहाँ सोई होइ राता। जहाँ सो रतन
कहै का बाता॥
नहिं पावस ओहि देसरां, नहिं हेवंत बसंत।
ना कोकिल न पपीहरा, केहि सुनि आवैं कंत॥

(ख) जोग ठगोरी ब्रज न बिकै हैं।
यह व्यौपार तिहोरो उधोए। ऐसोई फिरी जैहे॥
जापै लै आए हौ मधुकर ताके उर न समैहे।
दाख छाँड़ि कै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै?
मूरी के पातन के केना ओ मुक्ताहल दैहे।
सूरदास प्रभु गुनहि छाँड़ि कै को निरगुन निरबै हे॥?

अथवा

(3)

जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय
अति धाए॥

तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख
कंद मूल फल खाई॥

जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु
मोहि हरष बिसेषि॥

यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ भाया। चलेहु
हरषि हियँ धरि रघुनाथा॥

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेउ
ता ऊपर॥

बार-बार रघुबीर सँभारि। तरकेउ पवनतनय
बल भारी॥

जेहिं गिरी चरन देह हनुमंता। चलेउ सो गा
पाताल तुरंता॥

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एहि भाँति
चलेउ हनुमाना॥

जल निधि रघुपति दूत बिचारि। तैं मैनाक
होहि श्रमहारी॥

हनुमान तेहि परसा कर मुन्हि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम॥

(ग) प्रीतम सुजान मेरे हित के निधान कहौ,
कैसे रहें प्रान जौ अनखि अरसाय हौ।
तुम तो उदार दीन हीन आनि परयौ द्वार,
सुनिये पुकार याहि कौं लौं तरसाय हौ।
चातिक है रावरो अनोखे-मोह-आवरो,
सुजान रूप-बावरो, बदन दरसाय हौ।
बिरह नसाय जया हिय मैं बसाय आय,
हाय! कब आनंद को घन बरसाय हौं॥

अथवा

पहिले घन आनंद सींचि सुजान कही बतियां
अति प्यार-पगी।
अब लाय बियोग की लाय, बलाय बढ़ाय
बिसाय-दगानि दगी।
अँखियाँ दुखियानी कुबानि परी, न कहुँ लगै,
कौन घरी सु लगी।
मति दौरि थकी, न लहै ठिक ठौर, अमोहि
के मोह-मिठास ठगी॥

2. कबीर की भक्ति भावना उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

जायसी द्वारा रचित 'नागमति वियोग खंड' की विशेषताएं लिखिए।

3. सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशेषताएँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

घनानंद की काव्यगत विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 3×5

(*i*) दरबारी कवि विद्यापति

(*ii*) आदिकाल की परिस्थितियाँ

(*iii*) रहीम की दानवीरता

(*iv*) रीतिमुक्त काव्यधारा की तीन प्रमुख विशेषताएँ

(*v*) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य के इतिहास का विभाजन (परिचय)

(*vi*) रामचरित मानस की तीन प्रमुख विशेषताएँ

(*vii*) रामचरित मानस का सुंदर काण्ड

5. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×15

(*i*) आपके पाठ्यक्रम में संकलित 'हमसों कहत कौन की बातें .....' कविता पंक्ति के रचयिता का नाम लिखिए।

(*ii*) आपके पाठ्यक्रम में संकलित कविता पंक्ति 'अंबर कुंजा कुरलिया, गरजि भरे सब ताल .....' के रचयिता का नाम लिखिए।

(*iii*) रसखान के गुरु का नाम लिखिए।

(*iv*) 'पद्मावत' के रचयिता का नाम लिखिए।

(*v*) कबीर के काव्य में प्रयुक्त 'सतगुरु' शब्द का अर्थ लिखिए।

(*vi*) कबीर के काव्य में 'रमैनी' किस प्रकार की रचना को कहा जाता है? लिखिए।

(*vii*) भ्रमरगीत के पात्र 'उद्धव' कौन थे? लिखिए।

(*viii*) भ्रमरगीत के 'जसोदानन्दन' किसे कहा गया है? लिखिए।

(*ix*) विद्यापति ने किन तीन भाषाओं में अपनी रचनाएं लिखी हैं? लिखिए।

(*x*) 'कीर्तिलता' रचना के रचयिता का नाम लिखिए।

(*xi*) कवि रहीम के पिता का नाम लिखिए।

(*xii*) 'बरपै नायिका भेद' रचना के कवि का नाम लिखिए।

(*xiii*) 'प्रेम वाटिका' रचना के कवि का नाम लिखिए।

(*xiv*) आपके पाठ्यक्रम में संकलित कविता पंक्ति 'आये जोग सिखावन पांडे .....' के रचयिता का नाम लिखिए।

(*xv*) सूरदास कृत 'भ्रमरगीत' किस भाषा में लिखा गया है? लिखिए।

———